





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
अजीत समाचार

दिनांक  
07.07.2021

पृष्ठ संख्या  
-

कॉलम  
-

## प्रदेश हेतु वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच-160 : प्रो. काम्बोज

हिसार, 6 जुलाई (राजस्थान) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उच्च उपज वाली किस्म सीओएच-160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व शहरी निवासियों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म राज्य पत्रों वाली व अधिक उपज वाली है और किसानों की उपजदारी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म की विश्वविद्यालय के भारतीय अनुसंधान केंद्र उजानी, बाराक के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म की भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कृषि एवं भारतीय विभाग की 'भारत मानक, अधिसूचित एवं अनुसंधान केंद्रों का-संकीर्ण' द्वारा डॉ. दिलीप में अर्जेंटिना 60वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

शहरी निवासियों को अधिक जलवायु सहन करने व अधिक उपज वाली किस्म। कुलपति हरियाणा प्रो.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने वाली और उच्च उपज वाली किस्म की खोज करना होती है,



विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी.आर. काम्बोज।

किसमें उच्च उपज देने और प्रमुख बीज-पत्तों के उपजदार पैरों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो।

### कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शक्ति व ऊर्ध्वी पकने वाली किस्म सीओएच-160

सीओएच 160 किस्म किसानों की उपजदारी और उपजों की मात्रा को बढ़ाने में महत्व विकसित की गई किस्म है जो इनके लिए उच्च उपज है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 2236 के लिए उपयुक्त विकल्प है। कच्ची पकने के कारण किसानों में यह किस्म लिए कुलपिता में ही अधिक पसंद जाती है। इस किस्म के रोपण के 300 दिनों में ही खसिर का उच्च उपज देने का ( 88.55 प्रतिशत)

रोग है, जिससे प्रति हेक्टेयर 21.56 टन प्रतिशतमात्र प्राप्त करने का होता है।

किस्म विकसित करने में इन वैज्ञानिकों की नेतृत्व लक्ष्मी देवी। इस किस्म को विकसित करने में डॉ. ए.एन. मेहरा, डॉ. एम.पी. बरालिया और डॉ. एम.पी. बरालिया सहित सहयोगियों में डॉ. एन.एन. मेहरा, डॉ. राजेश मेहरा, डॉ. आर.प्रि. डॉ. विजय कुमार, डॉ. वेद शर्मा, डॉ. एम.प्रि और डॉ. अरवि कुमार शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म की अनुसंधान प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का प्रचार बढ़ाने में डॉ. जगत कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण

योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति हरियाणा प्रो.आर. काम्बोज ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपजदार व कच्ची होने वाली किस्म को विकसित करके भारतीय अनुसंधान केंद्र उजानी, बाराक को वर्ष 2017-18 व 2018-19 में अर्जेंटिना भारतीय संरक्षित तथा अनुसंधान परिशोधन, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा प्राप्त अनुसंधान में अनुसंधान केंद्र के लिए सम्मोहित भी किया गया था।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	07.07.2021	-	-

## प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिस्सा : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत जलोढी किस्म सीओएच 160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म ऊंचा फसने वाली व अधिक उत्पाद वाली है और किसानों को आसानी से पकाने में सक्षमता प्राप्त है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उजाने, बरसत के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'कमल मानक, अभिलेखित एवं अनुमोदन

केंद्रों पर उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वाँ बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिलेखित किया गया है। चीनी मिलों को चाहिए जल्द पकाने व अधिक उत्पाद वाली किस्म कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकाने वाली और उच्च उत्पाद वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सड़क रंग और प्रमुख बीट-परियों के प्रचलित रोनों के प्रति योग प्रतिक्रमण क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238



प्रमुख किस्म है जो लाल सड़क, रंग और अन्य बीट-परियों के लिए अनुसंधानकर्ता हो गई है। यह चीनी फेडक और अन्य बीट-परियों के लिए भी अनुसंधानकर्ता हो गई है। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों को जबरन और उद्योगों को फसल को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है जो इसके लिए अति उत्तम है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 0238 के लिए उपयुक्त विकल्प है। जल्दी पकाने के कारण मिलों में भी इसके लिए 20-25% में ही अधिक

कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च उत्पाद और जलोढी फसने वाली किस्म सीओएच 160

उत्पन्न होती है। किस्म की खसियात के बारे में पहले हुए उन्होंने कहा कि सीओएच 160 किस्म का लता मध्यम आकार का थोड़ा होता है जिसमें बड़ा बुलान होता है। उसकी पत्तियां गहरी हरी व मध्यम चौड़ी पत्ते वाली किन्हीं होती हैं और इसके पत्ते मुक्ति हुए होते हैं। इनमें चीनी के उत्पाद के इंटरमीडियम होते हैं। इसका लता उंच होता है जिसमें छेद व के बरतान होते हैं जिससे हमारे रस को मात्र अधिक होती है। इस किस्म की 838 किंटा प्रति हेक्टेयर की औसत पैदावार होती गई है।



**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार**  
**लोक संपर्क कार्यालय**

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमर्ग	07.07.2021	-	-

# प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160: कुलपति

**हफ्ति वेइक्रिकों में विकसित की गन्ने की उच्च राकंड और जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160**

**838 मिटल तक आंकी गई है प्रति हेक्टर औसतन पैदावार**

**जगमर्ग न्यूज**

हिसार। हरियाणा कृषि विभागीयपालक के कृषि विज्ञानियों ने इस वर्ष अपने की उच्चतम औसत किस्म सीओएच-160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व खेती करने के लिए वास्तव साबित होगी।

यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक उपजदा गन्नी है और किसानों को जल्दगरी बढ़ाने में वास्तवपूर्ण सुविधा देकर बढ़ाती है। इस किस्म की विकसितकरण के संशोधन अनुसंधान केन्द्र, रायपुरी, बाजपुरा के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है।

विभागीयपालक इस विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कृषि एवं मंडलीय विभाग की



"उच्चतम पैदावार, अधिकतम रूप अवशोषण क्षमता 1.5-2.0% है इस वर्ष किसानों में अवशोषण 8.4% पैदावार में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिकतम किस्म प्राप्त है।

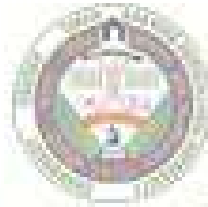
खेती करने को अधिक जल्द पकने व अधिक उपजदा गन्नी किस्म सुलाहनी डीएनए बीजाणु संशोधन के कारण कि प्रदेश में खेती करने को जल्दी पकने वाली और उच्च उपजदा गन्नी किस्म की बाजार प्रस्तुत होगी है, जिससे उच्च पैदावार होने और प्रमुख खेती-पकने के प्रयोग करने के प्रति क्षेत्र अधिकतर प्रभाव

अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में खेती 0.21% प्रमुख किस्म है जो उच्च पैदावार प्राप्त और उच्च उपजदाओं के लिए अधिकतम उपजदा हो गई है। यह खेती पैदावार और उच्च खेती-पकने के लिए की अधिकतम उपजदा हो गई है।

इससे अधिकतम 160 किस्म किसानों को लगाते और प्रदेशों की गन्ने की पैदावार में राज्य सरकारों की यह किस्म है जो उच्चतम पैदावार देती है और प्रदेश में प्रमुख किस्म खेती 0.21% के लिए अनुसंधान प्रयोग है।

जल्दी पकने के कारण किसानों में भी उच्चतम पैदावार प्राप्त हो रही अधिक प्राप्त होती है। किस्म की विकसित के वर्ष में पहले हुए प्रयोगों के लिए सीओएच 160 किस्म का उच्चतम उपजदा प्राप्त होता होगा है जिसमें यह प्रमुख होता है। इससे अधिकतम पैदावार होने व और उच्चतम पैदावार देने में है। इससे किसानों के अधिकतम पैदावार होने है। इससे उच्चतम पैदावार होने है कि किसानों को है जिससे उच्चतम पैदावार अधिकतम होती है। इस किस्म की 838 मिटल प्रति हेक्टर की अधिकतम पैदावार होती है।

इससे किसानों को किस्म मिलने वाली है और खेती पैदावार को भी यह प्राप्त होती है। इस किस्म के पैदावार के 160 टन में ही उच्चतम का उच्चतम पैदावार (18.35 टन/हेक्टर) होता है, जिससे प्रति हेक्टर 11.34 टन अधिकतम पैदावार करने प्राप्त होती है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	06.07.2021	-	-

## हकृषि वैज्ञानिकों ने गन्ने की उन्नत किस्म की विकसित

हिसार, 06 अक्टूबर/विशेष

कोयले जलाने वाले हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अग्रेसरी किस्म कोयले 160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व खेती मितियों के लिए आदर्श साबित होगी। यह किस्म जलू तकने वाली व अधिक लंबाई वाली है और किसानों की आसानी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र जयपुरी, भारतनगर के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कृषि एवं आदर्श विभाग की 'कृषक भवन, अधिसूचना एवं अनुसंधान केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिष्ठाित किया गया है। कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में खेती उद्योग को जल्दी तकने वाली और उच्च लंबाई वाली किस्म की बहुत जरूरत होती है, जिसमें उच्च लंबाई और प्रमुख बीट-फलियों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीजी 0238 प्रमुख किस्म है जो उच्च लंबाई, मजद और अन्य बीमारियों के लिए प्रतिरोधक होती है। यह बीटो फेदक और अन्य बीट-फलियों के लिए भी प्रतिरोधक होती है। इसीलिए कोयले 160 किस्म किसानों की

जानकारी और उद्योगों की सेवा को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है जो इसके लिए अति उपयुक्त है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीजी 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्पर्धा है। जल्दी तकने के कारण मितियों में भी इसके लिए गुणवत्ता में ही अधिक लाभ बढ़ती है। इस किस्म को विकसित करने में डॉ. सुरेश मेहरा, डॉ. सुनील शर्मा और डॉ. एमके कोशिक जयपुरी कालेजों में डॉ. सुभाष शर्मा, डॉ. राजेश मेहरा, डॉ. अमर सिंह, डॉ. विजय कुमार, डॉ. मेहरा चंद, डॉ. रम सिंह और डॉ. शरीफ जयपुरी शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म को अनुसंधान प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का गन्ना बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर काम्बोज ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और धनियामें भी निरंतर प्रयास करने का आग्रह किया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. सुखदेव शर्मा ने बताया कि कोयले 160 एक बहुमुखी किस्म है, जो जलू जलू और जलू रोगों से जलू से बचा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में विकसित की गई एकलैक की लंबाई 25 प्रतिशत तक अधिक जलू तकने है जबकि जलू रोग प्रतिरोधक क्षमता भी है। यदि इसे जलू रोग प्रतिरोधक में देना किस्म जलू है तो यह पौधक बढ़ाने के लिए भी उपयुक्त किस्म है। यह उच्च लंबाई और अन्य बीमारियों के प्रतिरोधक रोग के लिए प्रतिरोधी है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

पल पल न्यूज

07.07.2021

-

-

## प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 : प्रो. काम्बोज

पल पल न्यूज, हिसार, 6 जुलाई: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने एक वर्ष की कोशिश के बाद अगले दिनांक नवंबर 2021 तक किसानों को ही से बीटा के किस्मों में सबसे बेहतर के लिए अपना खर्च करते हुए किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने एक वर्ष की कोशिशों के बाद अगले दिनांक नवंबर 2021 तक किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है।

किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने एक वर्ष की कोशिशों के बाद अगले दिनांक नवंबर 2021 तक किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है।



प्रो. काम्बोज के साथ सीओएच 160 किस्म के बीटा के किस्मों के लिए अग्रिम परीक्षण के बाद

है, यह बीटा किस्म की एक बेहतर किस्म के लिए ही अग्रिम परीक्षण के बाद है। इस किस्म को अगले दिनांक नवंबर 2021 तक किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने एक वर्ष की कोशिशों के बाद अगले दिनांक नवंबर 2021 तक किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है।

किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने एक वर्ष की कोशिशों के बाद अगले दिनांक नवंबर 2021 तक किसानों को बेहतर खर्च करने में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है और किसानों को आसानी से अपने कोशिशों में सक्षम करने का उद्देश्य रखा है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

## लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	06.07.2021	-	-

### 838 किंवटल प्रति हेक्टेयर पैदावार देती है गन्ने की सीओएच-160 किस्म : प्रो. काम्बोज

समाचार इतिहास न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानियों ने इस वर्ष गन्ने की एक अग्रेसर किस्म सीओएच-160 विकसित की है जो प्रति हेक्टेयर 838 क्वींटल गन्ने की पैदावार देती है। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और



किस्मों को लागू करने में सफलतापूर्वक सुनिश्चित किया जा रहा है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र गुरुदास, बाराक के विज्ञानियों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को खाना खाकर के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कृषि एवं खाद्योद्यम विभाग की "खाद्य सफाई, अभियंत्रण एवं अनुसंधान केंद्रों पर-सोनी" द्वारा की गई है। इस किस्म में प्रतिहेक्टेयर 838 क्वींटल गन्ने की पैदावार देती है जो अधिक शर्करा वाली है।

### चीनी मिलों को चाहिए जल्द पकने व अधिक शर्करा वाली किस्म

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख, काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में चीने मिलों को जल्दी पकने वाली और जल्द पकने वाली किस्म की जरूरत महसूस होती है, जिससे समय बचाने में और अधिक शर्करा वाली किस्म विकसित करने के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इसी प्रकार प्रदेश में सीओ-160 प्रमुख किस्म है जो खाना खाकर, खर और अन्य बीमारियों के लिए प्रतिरोधकशक्ति को बढ़ाता है। यह चीनी पैदावार और अन्य बीमार-पतियों के लिए भी प्रतिरोधकशक्ति को बढ़ाता है। जल्दी पकने के कारण किस्मों में जो अधिक मात्रा में सुक्रोज के जो अधिक मात्रा होती है। इस किस्म को 2000 हेक्टेयर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

**किस्म विकसित करने में इन विज्ञानियों की मेहनत लगी गैर :** इस किस्म को विकसित करने में डॉ. सुभाष, मेहरा, डॉ. राधा, चर्चितल और डॉ. राधा, कोचिंग तकनीक परामर्शकों में डॉ. सुभाष, मेहरा, डॉ. राधा, मेहरा, डॉ. राधा, सिंह, डॉ. किशन कुमार, डॉ. मेहरा, डॉ. राधा, सिंह और डॉ. अशोक कुमार शामिल थे। इस किस्म को

अनुसंधान केंद्रों पर हरियाणा में इस किस्म का एकत्रित करने में डॉ. राधा, कुमार और डॉ. सुभाष राधा का महत्वपूर्ण योगदान था। कृषि विज्ञान केंद्र के डॉ. राधा, काम्बोज ने कृषि विज्ञानियों द्वारा इस प्रयोगों पर कार्य को और अधिक बढ़ावा देना प्रस्तावित करने का आग्रह किया।

### शरद व बसंत दोनों में ले सकते हैं फसल

विश्वविद्यालय के अनुसंधान विभाग की एक टीम, बाराक ने बताया कि सीओएच-160 एक अनुसंधान किस्म है, जो शरद ऋतु और बसंत दोनों ऋतुओं में बोई जा सकती है। इस किस्म में खाना खाकर के कृषि में विकसित की गई प्रयोगों को मात्र 20 प्रतिशत तक अधिक प्राप्त करता है यदि उपकरण अधिक लक्षित हो जाते हैं। यदि इसे खाना खाकर के क्षेत्र में पैदावार किया जाते है तो यह अधिक बढ़ावा के लिए भी अनुसंधान किस्म है। यह खाना खाकर और अन्य बीमारियों के प्रतिरोधक शक्ति के लिए सीओएच-160 की पैदावार और कृषि एवं खाद्य विभाग के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देता है।

इससे बताया कि क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र गुरुदास, बाराक की वर्ष 2017-18 व 2018-19 में अधिक प्रयोग प्रयोगों पर अनुसंधान परियोजना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा यह अनुसंधान में अनुसंधान के लिए समर्थन को किया गया था।







# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उजाला	7.7.21	1	1-8

## एचएयू ने विकसित की जल्द पकने और उच्च शर्करा वाली गन्ने की किस्म

### विशेषज्ञ बोले- दोनों सीजन में बो सकेजे

**माई चिटौ निबोटेर**  
हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उच्चतम अंशों की किस्म सीओएच 160 विकसित की है, जो प्रदेश के किसानों व पानी पिसों के लिए परदाय साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों को आसानी से मसाले में मसालेय भूमिका निभा सकती है।  
इस किस्म को विश्वविद्यालय के श्रेणी अनुसंधान केंद्र उचारन, कुरुक्षेत्र के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की

**वीसी प्रो. कांबोज बोले- प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 किस्म**  
**838 विचंडल तक आंकी गई है प्रति हेक्टेयर औसतन पैदावार**



कृषि मंत्रालय, आसमचन एक अनुसंधान केंद्रीय उप-संस्थान द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।  
विश्व के कुल प्रति बोआर कच्चे में ज्ञाया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को चालू पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म को सफल जल्द बनाने के लिए, जिसमें साल सड़न रोग और प्रमुख कीट-

पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में बीजे 0238 प्रमुख किस्म है, जो साल सड़न, स्पट और अन्य बीमारियों के लिए आसमचनवर्ती हो गई है। यह बीटी चयन और अन्य कीट-पतंगों के

लिए भी आसमचनवर्ती हो गई थी। इसीलिए सीओएच 160 किस्म किसानों को आसानी और फलों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है, जो बल्के लिए अति उपयुक्त है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीजे 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्थापन है। इस किस्म को विकसित करने में डॉ. एएस मेहता, डॉ. एमजी कर्दवकर और डॉ. एमजी कंबोज, कर्कस सहयोगियों में डॉ. एचएल मेहरा, डॉ. प्रमोद मेहरा, डॉ. समर मिश्र, डॉ. निजल कुमार, डॉ. मेहरा चंद्र, डॉ. एम सिंह और डॉ. मंगेश कल्याण शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म को अनुसंधान प्रक्रिया व प्रयोगों में एस किस्म को रफा बंधन में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

- किस्म की खासियत**
- सीओएच 160 किस्म का तना मध्यम आकार का मोटा होता है, जिसमें बड़ कुपन होता है। इसकी पत्तियां गहरी हरी व मध्यम चौड़ी पत्ती वाली कैबोपी होती हैं और इसके पत्ते थुके हुए होते हैं। इनकी बोधिन के आकार के इंटर्नोड्स होते हैं। इसका रंग लाल होता है, जिसमें छेद न के बंधन होते हैं। जिससे इसमें रस की मात्रा अधिक होती है।
  - इस किस्म की 838 विचंडल प्रति हेक्टेयर की औसतन पैदावार आनी गई है। इसके अलावा यह किस्म पिरती नहीं है और मोड़ी फसल भी ली जा सकती है। इस किस्म के रोपण के 500 दिनों में ही खीड़ का अंश उच्च स्तर का (18.55 प्रतिशत) होता है, जिससे प्रति हेक्टेयर 11.56 टन कार्बोहाइड्रेट गन्ना पीली प्राप्त होती है।
  - सीओएच 160 एक बहुउद्देशीय किस्म है, जो भारत में और एशियाई देशों में बोई जा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में सिफारिस की गई पूजाओं की मात्रा 25 प्रतिशत तक अधिक डाल सकते हैं, व्यक्ति उत्पादन अधिक हासिल हो सके।
  - इसे व्यापक पधित अंतर में रोपण किया जाता है तो यह खासकर कटाई के लिए भी उपयुक्त किस्म है।
  - यह साल सड़न और अन्य बीमारियों के प्रचलित रोग के लिए प्रतिरोधी है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर डेकिंग न्यूज	07.07.2021	-	-

## प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

By Surash Sahasrani - July 6, 2021



एचआर डेकिंग न्यूज : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

**एचआर डेकिंग न्यूज।** हिसार के चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उपजदा अर्द्ध किस्म सीओएच 160 विकसित की है जो 80% के किसानों के बोने वाले क्षेत्र में लिए बरताने लायक होगी। यह किस्म अन्य फसल वाली व उच्चतम फसल वाली है जो किसानों की आय बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म का विश्वविद्यालय के सीनियर अनुसंधानक विद्वानों, काम्बोज के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म का भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के कृषि एवं आर्थिक विकास की फसल विकास, अधिसूचना एवं अनुसंधान विभाग इन अतिरिक्त एचआर न्यूजिनी व अर्थविकास 24वीं वार्षिक से हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

किसानों की आयवर्धनकरके विकसित की जायेगी इस नए प्रकार के इस हरियाणा किस्मों : एचआर डे. 2021, काम्बोज



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	7.7.21	1	2-8

# एचएयू ने विकसित की गन्ने की नई किस्म, मीठापन होगा जबरदस्त

हिसार (वि. : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानियों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अग्रेवी किस्म सीओएच 160 विकसित की है। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है इस किस्म के रोपण के 300 दिनों में ही खांड का अंश उच्च स्तर का (18.55 फीसद) होता है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के विज्ञानियों ने विकसित किया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना व अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।



गन्ने की उन्नत किस्म सीओएच 160 की फसल का फाईल फोटो।

### किस्म की यह है खासियत

सीओएच 160 किस्म का तना मध्यम आकार का मोटा होता है जिसमें बड़ कुशन होता है। इसकी पत्तियां गहरी हरी व मध्यम चौड़ी पत्ती वाली कैनेपी होती हैं और इसके पत्ते बड़े हुए होते हैं। इनमें बोबिन के आकार के इंटर्नोड्स होते हैं। इसका तना ठोस होता है जिसमें छेद न के बराबर होते हैं जिससे इसमें रस की मात्रा अधिक होती है। इस किस्म की 838 विपटल प्रति हेक्टेयर की औसतन पैदावार आंकी गई है। इसके अलावा यह किस्म गिरती नहीं है और मोड़ी फसल भी ली जा सकती है।

**किस्म विकसित करने में इन विज्ञानियों की मेहनत लाई रंग**  
डा. एसपी कादियान और डा. एमसी कंबोज जबकि सहयोगियों में डा. एवएल रोहितिया, डा. राकेश मेहरा, डा. समर सिंह, डा. विजय कुमार, डा. मेहर

चंद, डा. रण सिंह और डा. सरोज जयपाल शामिल रहे। इस किस्म की अनुमोदित प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का रुकबा बढ़ाने में डा. रमेश कुमार और डा. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

### चीनी मिलों को चाहिए जल्द पकने व अधिक शर्करा वाली किस्म

प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सड़न रोग और प्रमुख कीट-पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238 प्रमुख किस्म है जो लाल सड़न, स्मट और अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो गई है। यह चोटी भेदक और अन्य कीट-पतंगों के लिए भी अतिसंवेदनशील हो गई है। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है। जल्दी पकने के कारण मिलों में भी इसके लिए शुरुआत से ही अधिक मांग रहती है।

सीओएच 160 एक बहुमुखी किस्म है, जो शरद ऋतु और वसंत दोनों ऋतुओं में बोई जा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में सिकारिशा की गई एनपीके की मात्रा 25 फीसद तक अधिक डाल सकते हैं ताकि उत्पादन अधिक हासिल हो सके।  
डा. बीआर कांबोज, कुलाधि. एचएयू





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि-भूमि	7-7-21	4	7-8

### गन्ने की उच्च शर्करा वाली किस्म विकसित, 838 क्विंटल होगी पैदावार

■ चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी  
गन्ने की नई किस्म

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगती किस्म सीओएच 160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विवि के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विवि द्वारा विकसित इस किस्म को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण

#### इनकी मेहनत लाई रंग

इस किस्म को विकसित करने में डॉ. एसएस मेहला, डॉ. एसपी कादियान और डॉ. एमसी कंबोज जबकि सहयोगियों में डॉ. एचएल सेहलिया, डॉ. राकेश मेहरा, डॉ. समर सिंह, डॉ. विजय कुमार, डॉ. मेहरचंद, डॉ. रणसिंह और डॉ. सरोज जयपाल शामिल थे।

मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है इस किस्म की अनुमोदित प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	7.7.21	4	6

**अच्छी पैदावार के  
लिए वैज्ञानिक तरीके  
अपनाएं : डॉ. जगदेव**

हिसार। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के तत्वावधान में मंगलवार को गांव कुम्हारिया में ग्वार उत्पादन तकनीकी पर एक किसान शिविर किया गया। इसमें किसानों को ग्वार फसल के साथ-साथ नरमा कपास व अन्य फसलों की वैज्ञानिक ढंग से खेती करने के उपायों पर चर्चा की गई।

एचएयू के शस्य विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त पूर्व अध्यक्ष डॉ. जगदेव सिंह ने कहा कि ग्वार की फसल अधिकतर बरानी इलाकों में बोई जाती है, इसलिए किसानों को वह हर उपाय अपनाना होगा, जिससे भूमि की जल धारण क्षमता में बढ़ोतरी हो सके। इसके लिए उन्होंने खेत की गहरी जुताई करने, जैविक खादों का अधिक इस्तेमाल करने, फसल अवशेषों को जलाने की बजाए भूमि में दबाने, खरपतवार नाशी दवाओं के प्रयोग के स्थान पर दो बार निराई गुड़ाई करने जैसे कई उपाय सुझाए। संवाद





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
41 न 5 24/22	7.7.21	2	3-6

### एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शर्करा वाली किस्म सीओएच 160 838 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होगी औसतन पैदावार

एचएयू के वीसी ने कहा- प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अंगेती किस्म सीओएच 160 विकसित की है, जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली और अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

#### किस्म विकसित करने में इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

किस्म को विकसित करने में डॉ. ए.एस. मेहला, डॉ. एस.पी. कादियान और डॉ. एम.सी. कंबोज जबकि सहयोगियों में डॉ. एच.एल. सेहतिया, डॉ. राकेश मेहरा, डॉ. समर सिंह, डॉ. विजय कुमार, डॉ. मेहर चंद, डॉ. रण सिंह और डॉ. सरोज जयपाल शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म की अनुमोदित प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी।

#### किसान शरद और वसंत में भी ले सकते हैं फसल

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीओएच 160 एक बहुमुखी किस्म है, जो शरद ऋतु और वसंत दोनों ऋतुओं में बोई जा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में सिफारिश की गई एनपीके की मात्रा 25 प्रतिशत तक अधिक डाल सकते हैं ताकि उत्पादन अधिक हासिल हो सके। यदि इसे व्यापक पंक्ति अंतर में रोपण किया जाता है तो यह यांत्रिक कटाई के लिए भी उपयुक्त किस्म है। यह लाल सड़न और अन्य बीमारियों के प्रचलित रोग के लिए प्रतिरोधी है। एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने

वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सड़न रोग और प्रमुख कीट-पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238 प्रमुख किस्म है, जो लाल सड़न, स्मट और अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो गई है। यह छोटी भेदक और अन्य कीट-पतंगों के लिए भी अतिसंवेदनशील हो गई है। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है। जो इनके लिए अति उत्तम है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्थापन है।